हमारा शत्रु

अर्थात्

तम्बाकू का नशा



"मैं सदा इस कुटेव को जंगली, हानिकारक और गन्दी मानता आया हूं। अब तक मैं यह नहीं समझ पाया कि सिग्रेट पीने का इतना ज़बरदस्त शौक दुनिया को क्यों है? जबकि दारू और भांग की तरह तम्बाकू भी खराब है। नीरोग रहने की इच्छा करने वाले प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह तम्बाकू का व्यसन छोड़ दे।"

—महात्मा गान्धी

लेखक—श्री आचार्य भगवानदेव जी)

ओ३म्

हमारा शत्रु अर्थात् तम्बाकू का नशा

[बाल संस्करण]

लेखक

आचार्य भगवानदेव जी

प्रकाशक
वैदिक साहित्य सदन
आर्यसमाज मन्दिर, सीताराम बाजार देहली

मूल्य ।=)

मुद्रक—सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।

हमारा शत्रु अर्थात् तम्बाकू

प्रातःकाल का समय है, महेन्द्र यज्ञ करके ही चुको है कि राजेन्द्रकुमार उसके पास आ बैठता है और दोनों में यूं वार्तालाप होता है:-

महेन्द्रकुमार—प्रिय भ्राता राजेन्द्र जी ! क्या यह सत्य है कि आप अपने सहपाठी विद्यार्थियों तथा मित्रों के साथ खूब बीड़ी सिग्रेट उड़ाते हो और छिप-छिप कर हुक्का पीते तथा चिलम का भी दम लगाते हो ? क्या आप यह भूल गये कि हम आर्य (श्रेष्ठ) माता-पिता की सन्तान हैं ? क्यों अपने पवित्र कुल को कलङ्क लगाते हो ? क्यों छाती को काला करते और मस्तिष्क (दिमाग) को धुवें में उड़ाते हो ? किस नीच कुसङ्ग में पड़ कर इस भयङ्कर सर्व विनाशक तमोगुणी तम्बाकू को पीना सीखा है ? ईश्वर का भय खाओ और सत्य सत्य बताओ?

राजेन्द्रकुमार—पूज्य भ्राता जी ! मुझे अपनी आर्य कुल की मान मर्यादा का भली-भांति ध्यान है और मैं यह भी नहीं भूला कि हम विश्ववन्द्य आर्य ऋषियों की की सन्तान हैं। आप इतने दुःखी क्यों होते हो, मैं तो एकाध बार अपनी श्रेणी के विद्यार्थियों के साथ बीड़ी सिग्रेट पी लेता हूं। दो-चार बार हुक्का गुड़गुड़ा कर

देखा है। मैंने कौन-सा अनर्थ कर दिया जबकि हमारे प्रधान अध्यापक, यही नहीं हमारे स्कूल के आधे से भी अधिक अध्यापक, खूब आनन्द से स्कूल टायम में भी बीड़ी सिग्रेट उड़ाते हैं। हमारे स्कूल की क्या बात है सभी स्कूलों की यही अवस्था है। और विद्यार्थी तो आप जैसे थोड़े ही बचे हैं, नहीं तो सभी पीते हैं। मैं गाँव में सभी को देखता हूं कि हाली क्या पाली, मजदूर, किसान, माली सभी छोटे बड़े इसका स्वाद लेते हैं। हमारे घर में मेरे बुड्ढे दादा दिन रात हुक्का ही गुड़-गुड़ाते हैं। इससे कुल को क्या बट्टा लगता है? जैसे हम अनेक पत्तों वाले शाक खाते हैं यह तम्बाकू भी वैसी ही वस्तु है। इसके खाने-पीने में क्या दोष है? प्रत्यक्ष में तो कोई हानि भी दिखाई नहीं देती।

महेन्द्र—भ्राता गजेन्द्र! तम्बाकू का पत्ता शाक जैसा नहीं, इस पत्ते में भयंकर विष कूट कूट कर भरा है। मनुष्य जाति का वह दिन सबसे बढ़कर दुर्दिन था जिस दिन इस तम्बाकू के विषैले पत्ते का खान-पान मनुष्य ने आरम्भ किया। वह राक्षस तब से ही इतनी बुरी तरह से चिपटा है कि हमारे शरीर मन और आत्मा को अन्दर ही अन्दर जला कर भस्मसात् कर दिया है। सम्पूर्ण दुर्व्यसनों, पापों की तम्बाकू (बीड़ी सिगरेट) ही माता है।

यह गांझे से लेकर संध्या तक खाना पीना सिखाता है। या यों कहिये यह सब नशों का गुरु है और बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और केवल यह ही इस विष का सेवन करता है। प्रभु की सारी सृष्टि में कोई भी जन्तु ऐसा नहीं जो इसे खाता पीता हो। यह मूर्खता मनुष्य के ही भाग में आई है। वह अपने परम शत्रु को परम मित्र समझ बैठा है। यही मनुष्य का दुर्भाग्य और घोर अविद्या है कि वह विष को अमृत समझता है। तम्बाकू पीने वाला रोगों का घर बन जाता है। तम्बाकू के सेवन से स्वास्थ्य, बुद्धि, स्मरण-शक्ति और ब्रह्मचर्य अर्थात् वीर्य का नाश होता है। पित्त, वायु आदि दूषित होकर नेत्रज्योति, पाचनशक्ति, पुन्स्त्व तथा अन्य सर्व प्रकार की शक्तियों का ह्रास होता है। दाँतों की चमक चली जाती है। मुख और हाथों से दुर्गन्ध आती है। इससे आलस्य, हृदय की धड़कन, निर्बलता और अनिद्रा बढ़ती है। आँतें, पेट, रक्त, आदि सब धातुएँ दूषित और खराब हो जाती हैं। मस्तिष्क, फेफड़े, छाती आदि सभी अंग इस भयंकर विष से निर्बल हो, खाँसी, दमा और राजरोग (तपेदिक) तक को निमन्त्रण देते हैं। तन मन धन और समाज को भयंकर हानियां इससे पहुंचती हैं। तम्बाकू पीने वाला

जब इस नशे की कुटव का पूर्ण अभ्यस्त हो जाता है तो वह निर्लज्ज होकर अपने अमूल्य समय और चरित्र को भी मिट्टी में मिलाता है। वह कौन सा पाप है जो वह नहीं करता? यहाँ तक कि अपने यौवन और आयु को भी तम्बाकू देवता की भेंट चढ़ाता है। अपने अमुल्य मनुष्य जीवन को व्यर्थ में खोकर मृत्यु को बुलाता है।

भ्राता जी! तम्बाकू जैसी गन्दी वस्तु को पीने पिलाने वाला चाहे पिता, पितामह (दादा) हो, वा गुरु व अध्यापक हो, उसको उल्टी बात वा अधर्मयुक्त आचरण हमें कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिए। अपने नीच कर्मों का फल वे स्वयं भोगेंगे। 'बालादपि-सुभाषितं ग्राह्यम्' धर्म की वा भले की बात छोटे बालक की भी मान लेनी और अधर्म-पाप की शिक्षा, आज्ञा व बात गुरु माता पिता व अन्य कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो, किसी की भी मान्य नहीं। यह मनुधर्म शास्त्र की आज्ञा है। अन्य धर्मशास्त्रों ने भी कहा है—

"यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि।
यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।"

तैत्तिरीयारण्य० प्रपा० १० अनु० ८।

गुरु उपदेश देता है—हे शिष्य जो अनिन्दित, पापरहित अर्थात् अन्याय अधर्माचरण रहित, न्याय धर्मा-

चरण सहित कर्म हैं, उन्हीं का सेवन तू किया करना, इनसे विरुद्ध अधर्माचरण कभी मत करना। हे शिष्य! जो तेरे माता पिता, गुरु आचार्य अध्यापकादि हम लोगों के अच्छे धर्मयुक्त उत्तम कर्म हैं उन्हीं का आचरण तू कर और जो हमारे दुष्ट कर्म हों उनका आचरण तू मत कर। कबीर ने भी कहा है—

कबीर तेरी झोंपड़ी गल-कट्टों के पास।
अपनी करनी जायेंगे क्या बेटा क्या बाप॥

राजेन्द्र—भ्राता जी! आपने तो पेट भर तम्बाकू की निन्दा कर डाली। सारे संसार के दोष इसी में बता डाले किन्तु युक्ति न प्रमाण। "मान न मान मैं तेरा महमान" वाली बात आप पर घटती है। यों तो मैं भी जानता हूं कि आपको बोलना आता है क्योंकि आप विद्यार्थी-सभा के मन्त्री जो ठहरे। किन्तु आप वैद्यों, डाक्टरों, आयुर्वेदिक ग्रन्थों और धर्मग्रन्थों के प्रमाण तथा युक्ति देकर सिद्ध करें कि तम्बाकू से इतनी भयंकर हानियां हैं। आपने आकाश पृथ्वी को मिला दिया, तम्बाकू की इतनी निन्दा की कि आपने तो इसे पाताल में ही पहुँचा दिया। मुझे अपनी एक एक बात खूब खोलकर समझावें। मेरी समझ में यह तो भली-भाँति आ गया कि अधर्म अन्याय और पाप की बात किसी की

भी नहीं माननी चाहिए और आप भविष्य में देख लेना कि मैं इस पर डटकर चलूँगा।

महेन्द्र—प्रिय राजेन्द्र ! यदि आप ध्यान से सुनोगे तो सभी बातें आपकी समझ में आ जायेंगी। क्योंकि अभी थोड़े ही दिन से आप तम्बाकू पीना सीखने लगे हो, अतः बुद्धि अभी थोड़ी ही बिगड़ी है। यदि अधिक दिन बीत जाते तो फिर तो आपको ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते थे। यह बात आपकी ठीक ही है कि इस तम्बाकू को पाताल से ही लाया गया था। अतः पाताल में वा उससे भी परे पहुंचाना चाहता हूं। इसने हमारा सर्वनाश कर दिया। अब मैं अपनी प्रत्येक बात युक्ति-प्रमाण से सिद्ध करूँगा। आयुर्वेद के ग्रन्थ शार्ङ्गधर में लिखा है "बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।" जो वस्तु बुद्धि का नाश करती है उसे मदकारी (नशेवाली) कहते हैं। इसी प्रकार तम्बाकू भी नशेदार पदार्थ है। महर्षि दयानन्द भी लिखते हैं कि "जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गाँजा, भांग अफीम जो जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें"। फिर दूसरे स्थान पर लिखते हैं "जो विद्या पढ़ने पढ़ाने के विघ्न हैं उन्हें छोड़ देवें, जैसे मद्यादि का सेवन।"

(सत्यार्थ प्रकाश)

यहां दोनों स्थानों पर आदि शब्द से हुक्कादि सभी नशेदार पदार्थों का ग्रहण होता है! नशे वाले पदार्थ पहले बुद्धि का ही नाश करते हैं और "बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्" क्या अमूल्य बात कही है— बुद्धिमान् ही यथार्थ में बलवान होता है। जिसमें बुद्धि ही नहीं उसमें बल कहां? बुद्धिहीन पशु समान सदैव पराधीन हो रहा है और 'परवशं सर्वं दुःखं' "पराधीन सुपनेउ सुख नाहीं" पराधीन सदैव दुःखी रहता है। इस बुद्धि के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। इसी बुद्धि के बल से ही सिंह समान हिंसक और हाथी समान बलिष्ठ जंगली पशुओं को वश में लाता है। किन्तु इसी बुद्धि को अपनी मूर्खता से तम्बाकू के धूँवें में उड़ाता है। 'आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः' जिसका आहार भोजन शुद्ध है उसकी बुद्धि निर्मल और पवित्र हो जाती है और जिसकी बुद्धि शुद्ध होती है उस की स्मरणशक्ति ध्रुव निश्चल अर्थात् स्थिर हो जाती है।

वह जो कुछ पढ़ता और सुनता है उसे कभी नहीं भूलता 'जैसा खाये अन्न, वैसा बन जाये मन' 'जैसा पीवे पानी, वैसी बोले वाणी'। मनुष्य के आहार विहार से ही मन बुद्धि बनते और बिगड़ते हैं। तम्बाकू आदि नशे बुद्धि के परम वैरी हैं। काउन्ट टालस्टाय रूस के महात्मा हुए

हैं। वे लिखते हैं—"चुरट तम्बाकू पीने से बुद्धि वा विवेक-शक्ति नष्ट हो जाती है और इससे पाप में प्रवृत्ति होती है। यह एक ऐसा नशा है कि जो कई अँशो में शराब से भी खराब है।" वे कहते हैं कि "रूस के अधिकतर नरघातियों में सिग्रेट पीने के पश्चात् ही नर-हत्या करने का दुस्साहस उत्पन्न होता था।

अब आप समझ गये होंगे कि तम्बाकू एक नशा है जिसको इसका व्यसन लग जाता है वह इसकी खूब हानियां भी जानता है, इसे छोड़ने की इच्छा बार बार करता है, किन्तु छोड़ नहीं पाता। यह भी शराब के नशे के समान भयंकर व्यसन है और व्यसनों का मनुष्य दास (गुलाम) हो जाता है। दासता से बढ़कर क्या दुःख होगा ?

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर फांसी के तख्ते पर हँस-हँस कर झूलने वाले वीर ब्र० पं० रामप्रसाद बिस्मिल लिखते हैं "जब मैं उर्दू का चौथा दर्जा पास करके पांचवें में आया उस समय मेरी अवस्था चौदह वर्ष की होगी। मुझ में दो एक खराब आदतें भी पड़ गईं। मैं सिग्रेट पीने लगा कभी कभी भंग भी जमा लेता था। पिताजी की सन्दूक से रुपये-पैसे चुराने की भी आदत पड़ गई थी। इन पैसों से उपन्यास खरीदकर खूब पढ़ता।

घुन लगना आरम्भ ही हुआ था परमात्मा ने बड़ी सहायता की। मैं एक दिन भंग पीकर पिताजी के सन्दूकचे में से रुपये निकालने लगा। सन्दूकची खटखटा गई। माता जी को सन्देह हुआ, मुझे पकड़ लिया। परमात्मा की कृपा से मेरी चोरी पकड़ ली गई, नहीं तो दो चार वर्ष में न दीन का रहता न दुनिया का। मैं इसी प्रकार की कुटेवों के कारण दो चार बार उर्दू मिडिल की परीक्षा में उत्तीर्ण (पास) न हो सका। मैं फेल होने पर पड़ौस के मन्दिर में जाने लगा। वहाँ पुजारी जी ने मुझे ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया। वह मेरे पथप्रदर्शक बने। मैंने एक

दूसरे सज्जन को देखा देखी व्यायाम करना भी आरम्भ कर दिया। व्यायाम करने से मेरा शरीर बड़ा सुगठित हो गया था। रंग भी निखर आया था। श्री मुन्शी इन्द्रजीत ने आर्यसमाज सम्बन्धी कुछ उपदेश दिये। इसके पश्चात् मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे तख्ता ही पलट गया। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में नवीन पृष्ठ खोल दिया। मैंने उसमें उल्लिखित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया। इस समय तक मेरी सब कुटेवें तो छूट गई थीं; किन्तु सिग्रेट पीना न छूटता था। मैं सिग्रेट बहुत पीता था। एक दिन में पचास साठ सिग्रेट पी डालता था।

मुझे बड़ा दुःख होता था कि मैं इस जीवन में सिग्रेट पीने की कुटेव को न छोड़ सकूँगा। स्कूल में एक सहपाठी श्रीयुत सुशीलचन्द सेठ से कुछ विशेष स्नेह हो गया था। उन्हीं की दया के कारण मेरा सिग्रेट पीना भी छूट गया। मैं व्यायाम खूब करने लगा। मेरी सब बुरी आदतें तथा कुभावनायें जाती रहीं। सहसा ही बुरी आदतों को छोड़ा था इस कारण कभी कभी स्वप्नदोष हो जाता था। तब किसी सज्जन के कहने से नमक भी छोड़ दिया। एक समय भोजन करता। रात्री को केवल थोड़ा-सा दूध पीने लगा। मिर्च खटाई तो छूता भी न था। इस प्रकार पांच वर्ष तक नमक न खाया। नमक के न खाने से शरीर के सब दोष दूर हो गये और मेरा स्वास्थ्य दर्शनीय हो गया। सब लोग मेरे स्वास्थ्य को आश्चर्य की दृष्टि से देखा करते। मैं पढ़ने में भी बड़ा प्रयत्न करता था और अपने क्लास में प्रथम उत्तीर्ण होता।"

(श्री रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा से)

भाई राजेन्द्र जी! अब आप इस घटना से समझ गये होंगे कि मनुष्य कुसंग में पड़कर तम्बाकू के समान भयंकर नशों वा व्यसनों में फंसकर अपना सर्वनाश कर लेता है और कितना दुखी होता है और गिरे से गिरा मनुष्य सत्संग वा धर्मग्रन्थों के स्वाध्याय से उन्नति के

शिखर पर चढ़ जाता है। सिग्रेट वा तम्बाकू मस्तिष्क का तो सर्वथा सत्यानाश कर देता है। इसके पीने वाला विद्यार्थी एक ही श्रेणी में बार बार अनुत्तीर्ण (फेल) होता है। इसे छोड़ने पर श्रेणी में प्रथम आता है।

भारत के प्रसिद्ध वैद्य श्री पं० ठाकुरदत्त जी (अमृत धारा वाले) लिखते हैं—"पान, चाय, शराब, भङ्ग, चरस कहवा, अफीम आदि कोई भी नशे वाली वस्तु हरगिज कभी न पीवो—न छुवो। सारी आयु भर के लिये शपथ लो। सिग्रेट (तम्बाकू) भी अत्यन्त हानिकारक हैं। जो विद्यार्थी इनको पीता है मानो कि दिमाग (बुद्धि) को धुयें में उड़ाता है और छाती काली करता है और समय का नाश करता है।"

इसी प्रकार अनेक पुस्तकों के लेखक श्री वैद्य कविराज हरनाम दास बी० ए० लिखते हैं—"जहां बहुत अधिक मानसिक श्रम के साथ साथ तम्बाकू का सेवन किया जाता है, वहां मस्तिष्क की नसों के सख्त होने तथा मूर्छा होने का भी भय रहता है। तम्बाकू सिग्रेट पीने वाले जो कि मानसिक परिश्रम अधिक करते हैं उन्हें (विद्यार्थी आदियों को) अनिद्रा, सिर का भन्नाना (Dizziness) और सिर दर्दादि हो जाते हैं। तम्बाकू का सेवन भीतर ही भीतर खोखला कर देता है। बच्चे विद्यार्थी उन

हानियों को (प्रत्यक्ष) न देख कर यह समझते हैं कि रोग किसी और कारण से हुए हैं और अपने माता-पिता, अध्यापक और मित्रों की देखा देखी इस पाप में फंस जाते हैं और शनैः शनैः सेवन से इसके दास बन जाते हैं किसी को इसके बिना पिये टट्टी नहीं उतरती, किसी को भूख नहीं लगती, किसी को सिग्रेट के नशे के बिना निद्रा नहीं आती, कोई भोजन बिना रह सकता है किन्तु इसके बिना नहीं रह सकता।

मुझे एक धर्मोपदेशक ने अपना अनुभव बतलाया था—जेलों में तम्बाकू पीने के व्यसनी चोरी से बीड़ी मंगाकर पीते हैं। अपने वस्त्र तथा अपने साथियों का गुड़ आदि राशन का सामान चोरी से बेच बेच कर जेल के कैदी बीड़ी सिग्रेट मंगाते हैं। टट्टी और मार्ग पर पड़े हुए झूंठ (पीये हुए) बीड़ी सिग्रेट के टुकड़े उठा उठा कर पीते हुए कैदी मैंने अपनी आंखों से देखे हैं। जो किसी कारणवश छोटे बालक वा विद्यार्थी तम्बाकू के व्यसनी जेलों में चले जाते हैं, वे इन बीड़ी सिग्रेटों के बदले व्यभिचार के लिए अपना शरीर तक नीच अधिकारियों को सौंप देते हैं।

इससे बढ़कर निर्लज्जता, नीचता और दासता क्या हो सकती है ? तम्बाकू तुझे और तेरे पीने वाले को बार

बार धिक्कार है। यह धिक्कार मैं नहीं कहता किन्तु वे लम्बी सजावाले कैदी जो चोरी, डाका, व्यभिचार जैसे पाप कर्म करके जेल में जाते हैं और वहां जेल में वार्डर या नम्बरदार बन जाते हैं वे वार्डर कैदी हमारे देशभक्त और धर्मरक्षक कैदियों को कहते रहे हैं। घटनायें इस प्रकार हैं—एक मुसलमान वार्डर के साथ हम राशन लेने जा रहे थे। वह वार्डर बीड़ी पीता हुआ हमारे साथ चल रहा था। झट हमारे एक साथी ने (जो अपने धर्म-रक्षार्थ घर बार छोड़कर जेल में आया था) उस मुसलमान के मुख से झूठी बीड़ी निकाल ली और पीने लगा। ऐसी ही दूसरी घटना है। वार्डर के पास एक हमारा साथी जाकर गिड़गिड़ा कर बीड़ी मांगने लगा। वार्डर उसे धिक्कार कर कहने लगा—"अरे तुझे लज्जा नहीं आती। तुम घर छोड़ आये, माता-पिता तथा बाल-बच्चों को छोड़ आये। आज हजारों मील की दूरी पर यहां हैदराबाद जेल में पड़े अनेक कष्ट उठा रहे हो। तुम्हें धिक्कार है तुम सब कुछ छोड़ सकते हो, क्या यह बीड़ी नहीं छोड़ सकते?" ये शब्द मुझे बार बार याद आते रहते हैं। यह दासता और नीचता की पराकाष्ठा है। कहने को हम स्वतन्त्र हो गये। हमें स्वराज्य मिल गया। किन्तु क्या हम स्वाधीन

हैं ? जब तक शराब, तम्बाकू आदि व्यसनों में फंसे हैं तब तक हमें कौन स्वतन्त्र कह सकता है ?

भाई देखा कैसी दासता ? कैसी गुलामी ? दयालु देव ! हमारी दासता के सब बन्धनों को शीघ्र दूर करें।

राजेन्द्र—पूज्य भ्राता जी ! आपने मेरी आंखें खोल दीं। मैं तो सन्मार्ग छोड़ कुमार्ग के भयंकर गढ़े में पड़ने लगा था आपने बचा लिया। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तम्बाकू आदि किसी भी मादक द्रव्य को पीना तो दूर रहा, आयु भर कभी भूल कर छुऊंगा भी नहीं। किन्तु भ्राता जी ! मुझे यह और समझा दें कि यह तम्बाकू का नशा बल, शक्ति, वीर्य वा ब्रह्मचर्य का किस प्रकार नाश करता है ? कई तम्बाकू के पियक्कड़ तो यह कहते हैं कि तम्बाकू के पीने से थकावट दूर होकर स्फूर्ति, उत्साह और शक्ति का सञ्चार होता है। जहां दो चार सिग्रेट के सुट लगाये कि थकावट दूर भागी, फिर नई शक्ति और नये जोश से मनुष्य काम करता है।

महेन्द्र—प्रिय राजेन्द्र ! मैं अपना और आपका सौभाग्य समझता हूं कि आपने इस महा पाप का परित्याग कर दिया और अपने पवित्र जीवन को मृत्यु के मुख में जाते जाते बचा ही लिया। मैं तो पहले ही जानता था

कि आप सुशील हो किन्तु कुसंग के कारण ही कुटेवों में फंसने लगे हो। सावधान ! कुसंग काले नाग से भी भयानक है। कुसंग का मारा मनुष्य अनेक जन्मों तक नहीं उभरता। कुसंग से देवता भी राक्षस बन जाते हैं। अब अपने प्रश्न का उत्तर ध्यान से सुनो जितने भी तम्बाकू आदि नशे हैं इनसे शरीर तथा शरीर के अङ्गों में उत्तेजना पैदा होती है। इस उत्तेजना की गर्मी से रक्त में भी उष्णता (उबाल) आता है। मूर्ख भ्रम वश इस नशे की गर्मी वा उत्तेजना को बल वा शक्ति समझ बैठता है। जब तक यह नशा रहता है तब तक नकली उत्तेजना (गर्मी) भी रहती है। जहां नशे का प्रभाव दूर हुआ मनुष्य अपने आपको अधिक शक्तिहीन, निर्बल और थका हुआ अनुभव करता है। इसमें वास्तविक बल ताप (गर्मी) तथा शक्ति का ह्रास होता है। जैसे थके हुए घोड़े को चाबुक मार मार कर अधिक दौड़ाने के लिये उत्तेजित करते हैं। चाबुक की मार खाकर उत्तेजित हो घोड़े उस समय तो दौड़ लेते हैं। किन्तु उनकी आयु और जीवन घट जाता है। उनकी प्राण-शक्ति वा जीवन शक्ति की इति-श्री हो

जाती है, वे शीघ्र ही मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। इसी प्रकार नशे वाले पदार्थों से कुछ क्षणों के लिये तो उत्तेजना आ जाती है। किन्तु इसका परिणाम शरीर का ह्रास होता है। अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होकर शीघ्र जीवन का अन्त ही हो जाता है।

चरित्र का नाश

डा० केलाग "प्लेन फैक्ट्स" नामक पुस्तक में लिखते हैं—

"तम्बाकू का प्रभाव मनुष्य के आचार पर क्या होता है, इस बात को थोड़े ही लोग जानते हैं। बचपन में इस दुर्व्यसन के लग जाने से शीघ्र ही कुवासनायें भड़क उठती हैं और कुछ ही वर्षों में सदाचारी तथा पवित्र युवक को काम वासनाओं का ज्वालामुखी बना देती हैं। उसके अन्तःकरण की कुवासनाओं की ज्वालाओं से अश्लील तथा दुराचार का काला धुवां निकलने लगता है। देर तक तम्बाकू का प्रयोग करते रहने से नपुंसकता आ पहुँचती है।"

इसी प्रकार कई अमरीकन डाक्टरों का यही कथन है

कि तम्बाकू के सेवन से वीर्य पतला पड़ जाता है और स्वप्न या मूत्र के द्वारा बाहर निकल जाता है और पुरुष नपुंसक (हीजड़ा बन जाता है। वीर्य घृत के समान शरीर में जमा रहता है। जब बालक, कुमार, विद्यार्थी वा युवक तम्बाकू के विषैले नशे का पान करते हैं तो इन पर इस विष का प्रभाव बड़ा भयंकर पड़ता है। तम्बाकू की गर्मी से वीर्य पतला होकर अधोगति को प्राप्त होता है। इस प्रकार शरीर का यह अमूल्य रत्न नष्ट करके हमारे बालक या विद्यार्थी सर्वनाश को प्राप्त होते हैं। यह तम्बाकू का जहर ब्रह्मचर्य को नष्ट कर आयु, बल, शक्ति और तेज सब कुछ हर लेता है।

डा० जेकसन की सम्मति

तम्बाकू चाय आदि मादक पदार्थों के सेवन से काम-वासना भड़क उठती है। छोटे छोटे बालकों की जनन (मूत्र) इन्द्रिय में बार-बार उत्तेजना पैदा होती है। यह बार-बार की उत्तेजना शरीर के सारे वीर्य को जल के समान पतला कर देती है। फिर वीर्य नाश होने लगता है। शरीर खोखला होने लगता है। शरीर की वृद्धि रुक

जाती है । उलटा ह्रास और नाश होने लगता है । ब्रह्मचर्य के नाश से युवा होने से पूर्व बुढ़ापा आ जाता है। तम्बाकू के नशे से भड़की हुई कुवासनायें बालक को अनेक कुटेवों में फंसा देती हैं । इस प्रकार देश के करोड़ों बालक अपने ब्रह्मचर्य का नाश करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चलाते हैं । और कुसंग तथा अज्ञान वश तम्बाकू आदि दुर्व्यसनों में अपने सर्वस्व को लुटाते हैं । फिर धाड़ मार-मार कर रोते और पछताते हैं । किन्तु जब यह ब्रह्मचर्य का अमूल्य धन लुट जाता है तो कोई रोने धोने से वापिस लौटकर थोड़े ही आता है । यहां तक कि तम्बाकू की दया से नपुंसक (नामर्द) तक बन जाता है । ऐसी दुर्दशा होने पर उसे अपना तम्बाकू आदि नशे सिखाने वाला गुरु याद आता है । उस गुरु घण्टाल पर उसे बार-बार क्रोध और रोष आता है । तब चिल्ला-चिल्ला कर बड़बड़ाता है "हाय उस नीच ने मुझे यह क्या सिखा दिया ? इस तम्बाकू ने तो मेरे जीवन के दीपक को ही बुझा दिया" किन्तु "अब पछताये होता क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत ।"

इसी कारण एक अंग्रेज (H. S. Gamber) लिखता है—

"बुरी आदतों में से पहली और अधिक बुरी आदत जिससे मनुष्य की स्त्री-प्रसङ्ग सम्बन्धी योग्यता में बट्टा लगता है, तम्बाकू पीने की है। अर्थात् मनुष्य तम्बाकू सेवन से नपुंसक (नामर्द) हो जाता है।" वही विद्वान् दूसरे स्थान पर लिखता है कि—"डाक्टरों के मत में तम्बाकू ही मुख्य वस्तु है जिससे मनुष्य सन्तान पैदा करने के अयोग्य (नपुंसक) हो जाता है। यदि तुम पुरुषत्व को रखना चाहते हो तो तम्बाकू पीने की आदत छोड़ दो।"

अंग्रेजी के प्रसिद्ध काम-शास्त्र विषयक विश्वकोष (Encyclo peadia of Sex) में लिखा है कि "तम्बाकू से पुंसत्व (पुरुषत्व) शक्ति घट जाती है। बहुत से नपुंसक जब किसी औषधि से अच्छे नहीं हुए तब उनसे सिगरेट का परित्याग करवा कर देखा गया। उनमें पुरुषत्व शक्ति आ गई। कोई नपुंसक नहीं रहा।" वहां एक प्रचलित लोकोक्ति लिखी है। 'Tobacco and Women are

enemies to each other for one speaks the test for the other' अर्थात् "तम्बाकू और स्त्रियां परस्पर शत्रु हैं। एक के प्रति अनुराग होने से दूसरे के प्रति अनुराग नष्ट हो जाता है।" अभिप्राय यह है कि तम्बाकू सेवन करने वाले स्त्री पुरुष गृहस्थ के योग्य नहीं रहते।

श्री कविराज हरिनाम दास जी लिखते हैं- "तम्बाकू पुरुष के वीर्य और स्त्री के गर्भाशय दोनों को अपनी गर्मी से पिघला देती है। स्त्री के डिंबाशय के डिंब नरम पड़ जाते हैं। और डिंबाशय की दीवारों से अलग होकर टूट जाते हैं। पुरुष के शुक्रकीट अधमरे हो जाते हैं, किसी की उसी विष से पूंछ कट जाती है किसी का शिर। शुक्रकीटों की चाल में शराबी की चाल जैसी लड़खड़ाहट, अनियमितता आ जाती है। यदि स्त्री तम्बाकू पीती हो तो बहुधा सन्तान उत्पादन असम्भव हो जाता है। अंडेमान और विलायत की मेमें बहुधा सन्तान से बचने के लिये अन्यान्य उपायों के साथ सिग्रेट भी पीती हैं।"

स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक लिखते हैं—"जिस पुरुष को ५० वर्ष तक जीना हो वह तम्बाकू पीने से २०-३० वर्ष में ही मर जायेगा। यह आरोग्य का विकट

शत्रु है। हम अपने प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने स्वास्थ्य और वीर्य की रक्षा के लिए इस जंगलीपन की निशानी को सर्वथा त्याग दें।"

राजेन्द्र—पूज्य भ्राता जी ! तम्बाकू तो ब्रह्मचर्य का शत्रु होने से साक्षात मृत्यु ही है। जहां इससे बड़ी आयु के मनुष्यों को हानि पहुंचती है वहां बालकों, कुमारों, विद्यार्थियों, और युवकों का तो सर्वनाश ही कर देता है। फिर तो प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि देश के बालकों को इस विनाशकारी राक्षस से बचाये।

महेन्द्र भाई ! इसी कारण जापान में यदि बीस वर्ष तक का बालक या युवक चुरूट, सिग्रेट बीड़ी या तम्बाकू पीते देखा जाये तो तुरन्त उसके माता पिता पर जुर्माना होता है। इसी प्रकार के राज्य-नियम अनेक स्वतन्त्र देशों में हैं।

राजेन्द्र—पूज्य भ्राता जी ! हमारे देश में ऐसा राज्य नियम कब होगा ?

महेन्द्र—हमारी पुरानी अंग्रेजी सरकार ने कभी यह नियम बनाया था कि १८ वर्ष से कम कुमारों के लिये

तम्बाकू सेवन करना वर्जित है। कानून तोड़ने वालों के लिये दण्ड भी निश्चय किया था। वह कानून पुस्तकों में अब भी है। परन्तु उसका पालन नहीं कराया जाता। जब तक यथायोग्य न्याय पूर्वक अपराधी को सख्ती से दण्ड नहीं दिया जाता तब तक कानून या राज्य ढोंग है।

राजेन्द्र—भ्राता जी ! तम्बाकू भयंकर विष है और इसका सेवन महापाप है यह अब तक आपने खोलकर नहीं बताया।

महेन्द्र—लो सुन लो एक शिकागो का शरीर-शास्त्री लिखता है—"तम्बाकू में निकोटिन नाम का विष होता है। यदि निकोटिन के एक औंस का १/४८० भाग मनुष्य के रक्त (खून) में इन्जेकशन द्वारा मिला दिया जाये तो वह मर जायगा और १ भाग प्रत्येक सिग्रेट में रहता है। २४ घंटे में जितना तम्बाकू साधारण मनुष्य पी लेता है उसमें जितना निकोटिन Nicotin विष होता है यदि मनुष्य उसे एक ही बार खा लेवे तो वह अवश्य मर जायेगा।

एक अन्य डाक्टर लिखता है—"निकोटिन के अर्क

की एक बूँद से एक खरगोश ३ मिनट में मर जाता है। और मनुष्य चार पाँच मिनट में मर जाता है। निकोटिन की एक वा दो बूँदों मे बड़े से बड़ा कुत्ता तुरन्त मर जाता है। छोटे छोटे पंछियों के तो उसकी दुर्गन्ध व पत्तों के धुयें मात्र से ही प्राण निकल जाते हैं। भयंकर काला नाग उसकी एक बूँद से तुरन्त ही मर जाता है।" डा० मूसी तथा फ्रैंकलिन ने प्रयोग से सिद्ध किया है कि तम्बाकू का एक बूँद तेल बिल्ली को ५ मिनट के अन्दर मार गिराता है। चिकागो के डा० सटैहेंज लिखते हैं कि "तम्बाकू विष मे हृदय की गति वा धड़कन बढ़ जाती है और जो सिग्रेट पीते हैं उनके हृदय को २४ घण्टे में ३०० ०००(तीस सहस्र) बार अधिक धड़कना पड़ता है।

"Nicotines excite the heart to go faster. In the course of 24 hours a smoking heart may have to beat 30000 extra times." (Dr. Stein Hahs, Chicago)

डा० अल्काट लिखते हैं कि "तम्बाकू से शरीर के भीतरी अङ्ग वा भाग बिगड़ कर सूज जाते हैं वह भयंकर विष है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं।" डा० टी०

एल० का कथन है "तम्बाकू खावो, पियो या सूँघो—चाहे किसी रीति से उसका उपयोग करो पर उसमें जरा भी पोषक गुण नहीं किन्तु यह एक तीव्र विष है जो खून में मिलकर अकाल मृत्यु तथा कमजोरी के सिवा और कुछ नहीं लाता।"

प्रत्यक्ष प्रभाव

"यदि हुक्के की नै का मैल जो विशुद्ध निकोटिन विष होता है, चार छः रत्ती कुत्ते को दे दें तो तत्काल ही उसकी मृत्यु हो जाती है। सिग्रेट पीने से खुश्की, नसों की कठोरता, वीर्य और रक्त विकार, खांसी, कफ, लार बहना, छाती और गले की स्थायी खरखराहट, दमा, हिचकी मूर्च्छा, तपेदिक, हृदय की तीव्र धड़कन तथा पीड़ा जैसे अनेकों सत्यानाशक रोग लग जाते हैं जो तम्बाकू सेवन करने वालों के लिए मृत्यु का निमन्त्रण देते हैं।" फिर आगे लिखते हैं "यदि तम्बाकू पीने वालों को आतशक हो तो उनकी सन्तान को भयानक रूप से होता है। तम्बाकू पीने से नाड़ी सूत्रों (Nervous System) में भयानक रोग उत्पन्न होते हैं। कितनों के मस्तिष्क बिगड़ कर पागल हो जाते हैं, कितनों को लकवा, गठिया,


हमारा शत्रु अर्थात तम्बाकू का नशा
यमदूत
चक्कर

अधरंग आदि अनेक प्रकार के रोग जकड़ लेते हैं। यह निश्चित बात है। इस विष के कारण आयु घटती है, रक्त दूषित हो जाने से इसमें रोगों का मुकाबला करने की शक्ति नहीं रहती; अनेकों बार मनुष्य अवस्था से पहले ही मर जाता है। यदि ऐसे व्यक्ति को निमोनिया हो जाय तो प्राण लिये बिना नहीं छोड़ता; तम्बाकू सेवी के सन्तान तो हो जाती है किन्तु ऐसे व्यक्ति के विषैले वीर्य से उत्पन्न सन्तान के रक्त, हृदय, मस्तिष्क, फेफड़े और गले की बनावट बहुत दुर्बल होती है। ऐसे व्यक्ति के बच्चे अधिक आयु तक जीवित नहीं रहते। यदि बच जाते हैं, तो रोगों के घर बने रहते हैं।"

(*कविराज हरनामदास*)

राजेन्द्र—तम्बाकू पीने वाले यह कहते हैं कि तम्बाकू पीने और खाने से खाया पिया भोजन शीघ्र पच जाता है और शौच खुलकर आता है।

महेन्द्र—बात सर्वथा इससे उलटी है। अमरीका तथा योरुप के प्रसिद्ध डा०—रशु, वारम आदि लिखते हैं "तम्बाकू का विष दांतों को भारी हानि पहुंचाता है।" डा० मकी का कथन है कि "तम्बाकू पीने से हाजमा सुधरता है—यह विचार बिलकुल गलत है। ऐसे हजारों रोगी डाक्टरों के पास आते रहते हैं जिनकी पाचन-क्रिया

तम्बाकू के व्यसन से बिगड़ गई है।" तम्बाकू खाने से दांत निर्बल हो जाते हैं। उनसे अन्न ठीक नहीं चबाया जाता। चबाकर न खाने से बड़ी कठिनाई से थोड़ा बहुत पचता है, पाचन क्रिया पहले ही तम्बाकू के विष से बिगड़ जाती है। मन्दाग्नि का रोग हो जाता है। भूख नहीं लगती। टट्टी में बैठ बैठे सिग्रेट फूंकते रहते हैं। फिर भी टट्टी खुल कर नहीं आती। यदि शौच जाने से पूर्व कहीं इन्हें तम्बाकू पीने को न मिले फिर देखो तमाशा। टट्टी पेट में ही इकट्ठी हो जायेगी। यह व्यसनों की दासता स्वतन्त्र देश में किसे अच्छी लगेगी? ये व्यसन तो हथकड़ी बेड़ियों से भी भयंकर बन्धन हैं।

तम्बाकू एक भयंकर व्यसन है। इसे एक घटना स्पष्ट प्रकट करती है। १९१६ के विश्व-युद्ध के कामुक जीवन पर अंग्रेजी के एक प्रामाणिक ग्रन्थ (Sexual life during the World War) में लिखा है—फ्राँसीसी देशों में सिग्रेट का अत्यन्त अभाव हो गया तो वहां की तरुण स्त्रियां एक एक सिग्रेट लेकर अपना सतीत्व सिग्रेट देने वाले को किराये पर ही सौंप देती थीं।" अतः तम्बाकू आदि नशे महा पाप फैलाते हैं। इससे उद्दण्डता और निर्लज्जता दोनों ही बढ़ती हैं। इस प्रकार के व्यसनों में फंसने से मरना अच्छा है। क्या हाथी बैल घोड़े कभी

सिग्रेट पीने या तम्बाकू (जरदा) खाते हैं? क्या उन्हें भोजन नहीं पचता और टट्टी नहीं उतरती? कोई भी पशु पक्षी आदि प्राणी इसे छूता तक नहीं, भला खाने पीने की तो बात ही क्या है? ओ मूर्ख! तू यह तो बता कि क्या इस विष के खाने से भूख मिटती वा पेट भरता है? क्या इसका धुआं पीने से प्यास बुझती है? तुझे इसकी क्या आवश्यकता है? तेरे बिना क्या कोई प्राणी इसे खाता पीता या सूंघता है? फिर भी तू अपने को श्रेष्ठ समझकर अकड़ा फिरता है। प्रकृति के शुद्ध जलवायु को इस विष से दूषित कर औरों को दुःख देकर तथा हानि पहुँचाकर महापाप का भागी बनता है। तम्बाकू न पीने वाले को इस विष का धुआँ लगते ही चक्कर आने लगते हैं, जी घबराता है, वमन (कै) हो जाती है, मूर्छा तक आ जाती है। भूल से इसे सूंघ ले तो बार बार छींकें आतीं, आंख नाक से बहकर पानी जाने लगता है, यदि भूल से खाले तो इससे भी अधिक दुर्दशा होती है। यह बातें प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि इस विष से सदैव दूर रहो, न इसे पियो, न सूंघो और न ही खाओ। जो कोई ऐसा करे उसे समझाओ और इस महापाप से संसार का पिंड छुड़ाओ।

राजेन्द्र—भ्राता जी यह इतनी बुरी वस्तु इस पवित्र

ऋषि भूमि में कहां से आ गई और इसका प्रचार हमारे देश में कैसे हो गया ?

महेन्द्र—प्रिय बन्धु ! इसका आदि स्थान अमेरिका है। वहां के जङ्गली लोग इसे खाते पीते थे। वहां से वाल्ट रेले योरुप में ले गया। योरुप में भी पहिले स्पेन में इस की खेती हुई, वहां से पुर्तगाल में पहुँच गया। पुर्तगाली इसे भारत में लाये। मुसलमानों का राज्य था। उन्होंने इस को भारत में फैला दिया। रही-सही कमी अंग्रेजों ने पूरी कर दी। हम भी नीच हैं, हमने विदेशियों के गुण नहीं अपितु दोष ही ग्रहण किये हैं। यह नशे वाली वस्तु है। जिस को चिपट जाती है फिर इस को छोड़ना कठिन हो जाता है। सभी नशे एसे ही होते हैं। इन से सर्वथा दूर रहो और देश के बालकों को दूर रखो।

राजेन्द्र—यह और बताने की कृपा करें कि अपने बड़े बूढ़ों दादा आदि और अध्यापकों की चिलम वा हुक्का भरना चाहिये या नहीं ?

महेन्द्र—सर्वथा नहीं। यदि माता पिता आदि बच्चों से चिलम भरवाते या बाजार से सिग्रेट मंगवाते हैं और उन्हीं के आगे लम्बे-लम्बे कश लगाते हैं तो वे अपने बच्चों को इस विष का पीना सिखाते हैं। बच्चों के मुंह में भी इन्हें देखकर पानी भर आता है। वे पहले

चोरी से पीते हैं फिर यह लज्जा भी हट जाती है। बाप बेटे मिलकर साथ हुक्का बजाते हैं।

राजेन्द्र——क्या राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने निषेध नहीं किया, क्या उनकी बात को कांग्रेस सरकार नहीं मानती ?

महेन्द्र——पूज्य महात्मा गांधी जी कहते हैं --"मैं सदा इस कुटेव को जङ्गली, हानिकारक और गन्दी मानता आया हूं। अब तक मैं यह नहीं समझ पाया कि सिग्रेट पीने या तम्बाकू खाने का तथा हुलास सूंघने का इतना ज़बरदस्त शौक दुनिया को क्यों है ? जब कि दारू और भांग की तरह तम्बाकू भी खराब है। निरोग रहने की इच्छा करने वाले प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह तम्बाकू का व्यसन छोड़ दे।"

अब कांग्रेसी सरकार राजनियम द्वारा तम्बाकू बन्द क्यों नहीं करती--इस का कारण सरकार की गिरी हुई आर्थिक अवस्था ही प्रतीत होता है। राज-नियम द्वारा तम्बाकू को बन्द कराने से सरकार को न केवल तम्बाकू-कर का ही घाटा उठाना पड़ेगा अपितु उक्त नियम का पालन करवाने के लिये अतिरिक्त पुलिस आदि रखने का व्यय भी बढ़ जायेगा। सरकार के पास मद्य-निषेध—आन्दोलन, जमींदारी उन्मूलन तथा काश्मीर-युद्ध आदि

के कारण पहले ही धन की कमी है। यह भी हो सकता है कि सरकार को इतना जन-बल तम्बाकू निषेध आन्दोलन के पीछे न दीखता हो जितना कि चाहिये। किन्तु इन सब कारणों के होते हुए भी तम्बाकू-निषेध-आन्दोलन की सरकार को अवहेलना नहीं करनी चाहिये थी, क्योंकि जनता के चरित्र और स्वास्थ्य से बढ़कर कोई भी आवश्यक कार्य सरकार का नहीं है। खैर सरकार तो अपना कार्य करेगी सो करेगी ही, किन्तु हमें इस सम्बन्ध में अपना कर्तव्य अवश्य पालन करना चाहिये। वह यह कि हम सब मिलकर ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दें कि सरकार को इसे बन्द करना ही पड़े और उक्त वातावरण में सरकार के हाथ भी मजबूत हों। वातावरण निम्न उपायों द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है:—

१—प्रत्येक समाज, संस्था तथा सुधारक संस्था का कर्तव्य है कि वह "तम्बाकू विरोधी दिवस" मनावे और तद् विषयक प्रस्ताव स्वीकार करके सरकार से धूम्रपान-निषेध सम्बन्धी राजनियम बनाने की प्रार्थना करे।

२—प्रत्येक ऐसी संस्था को चाहिये कि वह सभाओं, चल चित्रों, व्यङ्ग-चित्रों, विज्ञापन आदि अनेक उपायों से जनता को तम्बाकू आदि सेवन करने की हानियां

बतावे और जनता से तम्बाकू का बहिष्कार करावे।

३—जनता में तम्बाकू की हानियों के संबन्ध में साहित्य बांटा जावे।

४—किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो तम्बाकू का किसी भी रूप में सेवन करता हो, किसी भी पाठशाला, औषधालय, अथवा अन्य लोकोपयोगी संस्था में नौकर न रखा जावे।

५—विवाह आदि सामाजिक अवसरों पर या अन्य मौकों पर अतिथियों का तम्बाकू से सत्कार न किया जावे। यदि अतिथि वा मित्र आदि ऐसा करने से बुरा मानें तो उनसे साफ कह दिया जावे कि मैं अपने मित्र के प्रति पाप नहीं कर सकता।

६—कुमारी नवयुवतियों को चाहिये कि धूम्रपान करने वाले युवकों से विवाह न करें।

७—तुरन्त ऐसा राज-नियम बनवाने के लिये प्रबल आन्दोलन करना चाहिये जिससे सार्वजनिक स्थानों यथा—रेलवे स्टेशन, औषधालय, पाठशाला पंचायत-घर, स्नान-गृह, कार्यालय, मोटर, रेल आदि में कोई भी धूम्रपान न कर सके, क्योंकि ऐसा होने से धूम्रपान न करने वालों को जबरदस्ती नाक द्वारा तम्बाकू पीना पड़ता है। धूम्रपान करने वालों को

कोई अधिकार नहीं कि दूसरों के अधिकारों पर बलात्कार करें।

गजेन्द्र—पूज्य भ्राता जी! आपने तम्बाकू की हानियां आदि बताकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं भी आज से आपका इस शुभ कार्य में हाथ बटाऊंगा। ओहो! अब तो पाठशाला का समय हो गया। अच्छा, नमस्ते।

महेन्द्र—परमात्मा का धन्यवाद है कि आप भी मेरे विचारों वाले हो गये, नमस्ते।

महेन्द्र को नमस्ते कर जैसे गजेन्द्र बाहर जाने को मुड़ा, उसकी दृष्टि दीवार पर एक उपदेश-पट्टिका पर पड़ी जिसपर उसने पहले ध्यान नहीं दिया था। उसने मन में निश्चय किया कि मैं भी ऐसी ही सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई एक पट्टिका अपने घर में लगाऊंगा। उपदेश-पट्टिका निम्न प्रकार थी:—

सावधान!

"जो विद्या पढ़ने पढ़ाने के विघ्न हैं उन्हें छोड़ देवें, जैसे मद्यादि का सेवन।"

—महर्षि दयानन्द